International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 28-05-2019; Accepted: 30-06-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 90-93

"चीड़ों पर चाँदनी" यात्रा साहित्य की प्रासंगिकता

हेमंत कुमार

शोध छात्र, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, केरल, भारत।

सारांश

निर्मल वर्मा ने 'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा साहित्य में भारत तथा यूरोप के सन्दर्भों को बहुत ही सामंजस्य पूर्ण ढंग से अध्ययन के उपरांत यूरोप में खास कर आइसलैंड के महत्त्व को विस्तार से चरितार्थ किया गया हैं। आइसलैंड में पर्यावरण के प्रति सतर्कता, पुस्तक पढ़ने के प्रति प्रेम, अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं अपने कर्तव्यों के प्रति सजगता, इस देश में असामाजिक तत्वों का उन्मूलन, आइसलैंड का स्वतंत्रता संघर्ष जैसे अनेक मुद्दों को विस्तार से रेखांकित करने की कोशिश की गयी हैं।

मूल शब्द : यात्रा साहित्य, प्रासंगिकता, रिक्याविक, वाइकिंग्स, पाण्डुलिपि।

प्रस्तावना

निर्मल वर्मा का मुख्य योगदान कथा साहित्य के क्षेत्र में माना जाता है। आधुनिकता का भावबोध लाने वाले कहानीकारों में इनका नाम प्रमुख रूप से लिया जाता हैं। वे नयी कहानी आंदोलन के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में ख्याति प्राप्त है। परिंदे, जलती झाड़ी,तीन एकांत, पिछली गर्मियों मे, कव्वे और काला पानी, बीच बहस में, सूखा तथा अन्य कहानियाँ आदि कहानी संग्रह इसके अलावा वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, तथा अंतिम अरण्य उपन्यास महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त इनका बहुत ही प्रसिद्ध यात्रा साहित्य 'चीड़ों पर चाँदनी' हैं। प्रस्तुत शोध –आलेख के केंद्र में यही यात्रा साहित्य है। निर्मल वर्मा धरती से जुड़े हुए लेखक हैं। इनकों मानवीय आदतों, मूल्यों, रोजमर्रा की घटनाओं, कमियों - खूबियों का भली-भांति ज्ञान है। इस सन्दर्भ में निर्मल वर्मा जी ने अपनी डायरी में कहतें हैं कि – "हमें समय के साथ अपने लगावों और वासनाओं को उसी तरह छोड़ते चलना चाहिए, जैसे सांप अपनी केचुली छोड़ता है...... और पेड़ अपने पत्तों फलों का बोझ। जहाँ पहले प्रेम की पीड़ा वास करती थी, वहाँ सिर्फ खाली गुफा होनी चाहिए, जिसे समय आने पर सन्यासी और जानवर दोनों छोड़ कर चले जाते हैं।" इस प्रकार वर्मा निर्मल समाज द्वारा जीवन को कठिन बनाने के बावजूद भी वे खुद मस्त रहते थें और कोशिश करते थे कि आस – पास सब मगन रहें, जीतें रहें। वर्मा जी जिंदगी के नैराश्य से हाथ छुड़ाकर भागने में यकीन नहीं रखते थे, बल्कि उसका आनंद लेते थे। अतएव लेखक की बातो से संदेश लेते हुए हमें जीवन के राजपथ पर हमेशा आगे बढ़ना चाहिए। उक्त सन्दर्भ में कबीर, सूर, तुलसी, प्रेमचंद तथा जयशंकर प्रसाद जैसे मूर्धन्य साहित्यकार अपने उच्च कोटि के विचारों के साथ आज भी जीवित हैं। कबीर ने 'दोहा' के माध्यम से उस समय के हिन्दू – मुस्लिम दोनों को फटकारते हुए बिना लाग लपेट के सच्चाई और तटस्थता के साथ हिंदू - मुस्लिम को एक सूत्र में लाने का काम किया। तो सूर अपने पदों के माध्यम से वात्सल्य के प्रतिमूर्ति सिद्ध हुए। तुलसी ने कालजयी महाकाव्य 'रामचरितमानस' लिखकर मानव समुदाय का उद्धार किया। प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद अपने यथार्थवादी दृष्टि के माध्यम से कृषक, शोषित, समुदाय के जीवन के संदर्भ में क्रमशः गोदान और कामायनी जैसे महानग्रंथ लिखकर अमरत्व को प्राप्त हुए। उच्च कोटि का साहित्य मानव के मानस पटल पर हमेशा-हमेशा के लिए अपना अमिट छाप छोड़ जाता है। यही साहित्य की उत्कृष्ट विशेषता भी है। उदाहरण स्वरूप तुलसीदास द्वारा स्थापित नैतिक मूल्य युगों-युगों तक जीवित रहेगा और उसमें अंतर्निहित उनके मानवीय उद्देश्य उन्हें सदैव प्रासंगिक बनाए रखेंगे। चाहे कोई भी रचनाकार हो अगर उसकी रचना प्रत्येक काल में अपनी सार्थकता सिद्ध करती है और उसकी उपयोगिता हमेशा बनी रहती है तो वह रचना और रचनाकार दोनों ही कालजयी हो जाते हैं। प्रत्येक रचनाकार की प्रासंगिकता को उसके साहित्य में आए पात्रों, चरित्रों, संवादों, स्थानों, नीतियों और दर्शन के विविध आयामों के आधार पर परखा जा सकता है।

निर्मल वर्मा द्वारा लिखित यात्रा साहित्य 'चीड़ों पर चाँदनी' मे यूरोपियन जन - जीवन तथा भारत में हिमाचल प्रदेश के शिमला के परिदृश्य को काफी सजगता के साथ उल्लेख किया गया है। यह यात्रा साहित्य कई मायनों में रोचक तथा अनेक संवेदनशील मुद्दों के साथ

पाठक वर्ग को आज भी सोचने पर मजबूर करता है | जो कि लेखक की लेखनी की ताकत है यही ताकत लेखक के साहित्य को प्रासंगिक बना देता है | निर्मल वर्मा यूरोप के पूर्वी - पश्चिमी हिस्से मे खूब घूमे और वहाँ आधुनिक यूरोपीय समाज का गहरा अध्ययन किया | गहन अध्ययन के पश्चात लेखक ने अनुसंधान परक रोचक, तथ्यपूर्ण तथा जीवंतता के साथ 'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा साहित्य का सृजन किया | इस यात्रा साहित्य में यूरोप के आइसलैंड, डेनमार्क,आयरलैंड, बर्लिन, कोपनहेगन, नार्वे, फ्रांस, वियना तथा चेकोस्लाविया जैसे स्थानों का तथा वहाँ के जन-जीवन के आबोहवा को करीब से महसूस किया | इस पुस्तक मे लेखक ने मुख्य रूप से अपनी आइसलैंड यात्रा के दौरान समुद्री मार्ग का बहुत ही साहसिक एवं जीवंत वर्णन किया हैं | आइसलैंड पहुँचने के बाद लेखक ने वहाँ के समाज का आत्म मूल्यांकन किया उसके बाद वहाँ की जो चीजें उन्हें अच्छी लगी उन घटनाओं, स्थानों, परिदृश्यों का बहुत ही सूक्ष्म अध्ययन के बाद जो सामने निकल कर आया वह निश्चय ही प्रशंसनीय है | आइसलैंड एक छोटा सा द्वीप है जो अनेक प्रकार के प्राकृतिक आपदाओं के झेलने के बावजूद भी अदम्य जिजीविषा का परिचायक है | इस द्वीप के लोगों में अपनी भाषा, संस्कृति, पर्यावरण के प्रति वफादारी एवं पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति, अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूकता, आइसलैंड का स्वतंत्रता संघर्ष, स्वच्छंद - जीवन यापन में विश्वास, जैसे अनेक प्रवृतियाँ पायी जाती है | ये प्रवृत्तियाँ ही आधुनिक संदर्भ में इस यात्रा साहित्य को प्रासंगिक बनाता है | इन प्रवृत्तियों का तथ्यपरक विश्लेषण करने के बाद स्पष्ट होगा कि कैसे 'चीड़ो पर चाँदनी' यात्रा साहित्य प्रासंगिक है | अब हम इस पुस्तक के प्रत्येक मुख्य बिंदुओं का पड़ताल करेंगे जो इसे प्रासंगिकता के खाँचे में लाता हैं –

पर्यावरण के प्रति सतर्कता

जीवन के लिए जिस प्रकार रोटी, कपड़ा और मकान अति आवश्यक चीज है ठीक उसी प्रकार जीवन को स्वस्थ रखने के लिए शुद्ध हवा (ऑक्सीजन) की भी जरूरत है परंतु आज का समय प्रदूषण का दौर है| जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण जैसे घातक प्रदूषण जीवन जीने में खलल पैदा कर दी है| इससे मानव समुदाय का जीवन प्रत्याशा लगातार घटता जा रहा है, लोग कालगर्त में जाने को मजबूर है | जबकि आइसलैंड के वातावरण के संदर्भ में लेखक कहते हैं "आइसलैंड की इस राजधानी का नाम है रिक्याविक – 'धुएँ का शहर'| नार्वे से जब पहले - पहल वाइकिंग्स यहाँ आए थे, तो गर्म पानी के झरनों से उठते हुए धुएँ को देखकर उन्होंने इस शहर का नामकरण किया था | लेकिन सच पूछा जाए, तो शहर का धूनी से दूर का संबंध भी नहीं | यूरोप के किसी नगर में मैंने हवा इतनी साफ, हल्की और सफेद (यदि हवा को सफेद कहा जा सके) नहीं देखी | यहाँ के निवासी कोयले का प्रयोग बिल्कुल नहीं करते, न खाना पकाने के लिए न कमरों को गर्म करने के लिए |" [1] लेखक की यह बातें स्पष्ट करती हैं कि आइसलैंड में वायु में कितनी शुद्धता है जो अभी भी बरक़रार हैं |

वहाँ के लोग पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक हैं इस संदर्भ में लेखक पुनः कहते हैं- "हवा सचमुच धुले काँच की तरह पारदर्शी है- इतनी साफ और हल्की कि उसे जेब में ठूसकर दिल्ली ले जाने को मन करता है |" [2] लेखक की बातों से भारत में वायु प्रदूषण का दुख साफ झलकता रहा हैं | अभी हाल ही में दिल्ली के वायु गुणवत्ता सूचकांक की जाँच की गई जिसमें 325(AQI) दर्ज किया गया | यह स्तर बेहद खतरनाक माना जाता है | भारत के कई शहरों में भी हवा का हाल कमोबेश ऐसा ही है | वैसे तो पूरी दुनिया वायु प्रदुषण का शिकार है लेकिन "भारत के लिए यह समस्या कुछ ज्यादा ही घातक होती जा रही है एच डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में 14 भारत के ही है |" [3]

अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूकता

आइसलैंड के लोग अपने देश के सच्चे हितैसी एवं अपने कर्तव्यों के प्रति काफी ईमानदार है | यह लोग अपनी संस्कृति, भाषा, राष्ट्रीय धरोहर जैसे अनेक चीजों के प्रति काफी सचेत रहते हैं | आइसलैंड पहले डेनमार्क के कब्जे में था परंतु अब आजाद है आज़ादी के बाद भी काफी लंबे समय से आइसलैंड का साहित्यिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथ 'सांगा ग्रंथों' की पांडुलिपियाँ डेनमार्क के अधिकार क्षेत्र में है | अपनी पांडुलिपियों को अपने देश में वापस लाने के लिए वहाँ की जनता लगातार शांतिपूर्वक धरना प्रदर्शन एवं बहस कर रही है | इस संदर्भ में लेखक एक दृश्य का उल्लेख करते हैं "डेनमार्क पार्लियामेंट ने पांडुलिपियों को वापस करने का निर्णय फिर स्थगित कर दिया | इस पर बहस हो रही है |"[4]

उक्त बातें हमें अपने देश के प्रति सजगता एवं अपने कर्तव्यनिष्ठा के लिए प्रेरित करती है | आइसलैंड के लोग अपने देश के अधिकारों के लिए कितना तत्पर है | वही भारत की दयनीय स्थिति का उल्लेख करते हुए लेखक कहते हैं- "उनकी तुलना में हम भारतीय बहुत 'गंभीर' हैं (कम से कम कोशिश यही रहती है कि गंभीर दिखे), आधारभूत समस्याओं की प्रश्नावली हमेशा जेब में रहती है... हाँलाकि एक प्रश्न बार-बार तंग करता है कि गंभीरता की बावजूद हममें से कितने भारतीय बुद्धिजीवी लंदन की 'इंडिया लाइब्रेरी' को भारत वापस लौटने के लिए उतने ही चिंतित हैं जितना वह उजड्ड आइसलैंडी व्यापारी मुखर परिहास के बावजूद अपने देश की पांडुलिपियों के बारे में था |"[5] अतः स्पष्ट है कि हम भारतीय उस स्तर तक अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति ईमानदार नहीं हैं | हमारे देश का दुर्भाग्य है कि देश की राजनीति में बहस का मुद्दा धर्म, सांप्रदायिकता, जाति, वर्गीय चेतना, अंध राष्ट्रभक्ति से सराबोर है जो

कि चिंता का विषय बना है |

पुस्तक प्रेम

विज्ञान एवं तकनीकी के समय में जितना तेजी से विकास हो रहा है उससे भी ज्यादा मात्रा में लगातार मानवीय मूल्यों में गिरावट भी आ रही है | जितना पहले पुस्तकें खरीदना एवं उसको पढ़ने के प्रति लोगों में ललक देखी जाती थी आज के दौर में लगातार कम होती जा रही है जो कि सोचनीय है | लोगों का समय टीवी, मोबाइल, गेम जैसे चीजों पर ज्यादा व्यतीत होता जा रहा है | आइसलैंड एक ऐसा छोटा सा देश है जहाँ के लोग पुस्तक पढ़ने एवं खरीदने में विश्व प्रसिद्ध है | यहाँ की साक्षरता दर भी सौ प्रतिशत है | यहाँ प्रत्येक साधारण से साधारण घर में एक पुस्तकालय अवश्य होता हैं | जैसे आजकल घर के बनावट में एक किचन रूम, बाथरूम होते हैं वैसे ही पुस्तकालय के लिए भी कमरा होता है | आइसलैंड में साहित्य के प्रति किस कदर का लगाव है इस उक्ति के माध्यम से समझ सकते हैं –“साहित्य के प्रति यह लगाव केवल बुद्धिजीवियों तक ही सीमित नहीं है, एक इंजीनियर से लेकर मछली पकड़ने वाले बूढ़े तक अपने देश के हर लेखक और कवि के भूत और भविष्य में कुछ इस तरह दिलचस्पी लेते हैं जिस जितना हमारे देश के युवक-युवतियाँ फिल्मी सितारों की जिंदगी में|”[6]

स्वच्छंद विचारधारा में विश्वास

प्रत्येक देश की अपनी खास पहचान होती है | उस पहचान की वाहक होती है उस देश की संस्कृति एवं सभ्यता, नैतिक विचार एवं भाषा आदि | नैतिकता का प्रत्येक पहलू हमेशा के लिए सत्य नहीं होता बल्कि समय परिस्थिति काल के अनुसार परिवर्तित भी होता रहता हैं| नैतिक मूल्यों में लचीलापन होना भी आवश्यक है अर्थात हमें अपनी नैतिक रूढ़ियों को त्यागने की जरूरत है | ऐसा करने से कई और असामाजिक वृत्तियों से बचा जा सकता है | उदाहरण स्वरूप स्त्री-पुरुष के बीच शारीरिक संबंधों को लेकर हम आवश्यकता से अधिक नैतिकता का आचरण करते हैं | हम जितना नैतिक होने का प्रयास करते हैं उतना ही ज्यादा अनैतिक होते चले जाते हैं | यही कारण हैं कि हमारे भारत देश में नैतिकता का आंचल ओढ़ने के बाद भी वेश्यावृत्ति को लगातार बढ़ावा मिल रहा है| जबकि आइसलैंड में –“नैतिकता जीवन पर थोपी नहीं गई, जीवन-क्रिया का अदृश्य अंग है| हर व्यक्ति -स्त्री और पुरुष स्वयं अपने प्रति जवाबदेह है, अन्ततोगत्वा यही जवाबदेही नैतिकता को अर्थ देती है | शायद आपको आश्चर्य हो कि आइसलैंड में अवैध बच्चों की संख्या दुनिया में सबसे अधिक है | किंतु इससे अधिक और आश्चर्य मुझे इसमें होता है कि ‘अवैध’ की कुंठा या अपराध भावना न ऐसे बच्चों में न उनकी माताओं में दिखाई देती है | जब एक आइसलैंड स्त्री माँ बनती है, तो उसके मित्र और पड़ोसी उसे बधाई देने आते है- वह विवाहित है या नहीं यह प्रश्न उन्हें कभी परेशान नहीं करता | अहम चीज यह है कि पड़ोसी में अमुक स्त्री माँ बनी है, अन्य प्रश्न निरे अप्रासंगिक हैं |” [7]

आइसलैंड का स्वतंत्रता संघर्ष

आइसलैंड पहले डेनमार्क के अधीन था जो सन 1944 में आजाद हुआ| आइसलैंड को स्वतंत्र गोला, बारूद, बंदूक से नहीं मिली बल्कि आइसलैंड के विद्वानों द्वारा धैर्यपूर्वक अपनी बातों को तथ्यों, प्रमाणों के साथ स्वस्थ्य बहस के प्रतिरूप में मिली | यथा- “अस्त्र– शास्त्रों के स्थान पर उनके हाथ हाथ में केवल कुछ काव्य - ग्रंथ और नीति-विधान की पुस्तके हुआ करती थी | डेनमार्क के राज दरबार में राज दरबार में तथ्यों और तर्कों के सहारे वे आइसलैंड की स्वतंत्रता के पक्ष में भाषण देते थे | कहते है, इन लंबे भाषणों से छुटकारा पाने के लिए अंत में डेनमार्क सम्राट ने आइसलैंड को स्वतंत्रता देने का निश्चय कर लिया था |” [8]

आज के समय में प्रत्येक देश अपने को शक्तिशाली बनाने के उपक्रम में विश्व विध्वंसक परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, मिसाइल जैसे खतरनाक चीजों का निर्माण कर रहा है | जो कि काफी भयावह है, इन चीजों से अस्तित्व के संकट पर खतरा मंडरा रहा है | आइसलैंड के स्वतंत्रता संघर्ष से हम प्रेरणा लेकर अपने ज्ञान संपदा को समृद्ध करके भी अपने देश को शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बना सकते हैं |

आइसलैंड की संस्कृति संरक्षण नीति

प्रत्येक देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है | यह प्रत्येक देश के उत्थान एवं पतन दोनों के रास्ते तय करता है, क्योकि जैसी दिशा होगी किसी देश की वैसी ही उस देश की दशा होगी | परिवर्तन से तात्पर्य एक स्वस्थ बदलाव से है जिसमें अपने देश की सोंधी सुगंध भी जीवित रहे | प्रत्येक देश एक दूसरे देश की नकल में अपने देश की मूल पहचान खोता जा रहा है | ऐसी स्थिति में पूरा विश्व संकट के दौर से गुजर रहा है | जबकि आइसलैंड अपनी संस्कृति को तमाम परिस्थितियों से घिरे होने के बावजूद भी सुरक्षित रखा है | इसी संदर्भ में निर्मल वर्मा कहते हैं- “ आइसलैंड पर सैकड़ो वर्षों के डेनिश राजनीतिक प्रभुत्व के बावजूद डेनिश साहित्य संस्कृति का हमारे देश पर कोई गहरा या अ स्थाई प्रभाव नहीं पड़ा | बल्कि यह कहना सत्य के काफी निकट होगा कि साहित्य और कला के क्षेत्र में डेनमार्क को आइसलैंड के से निरंतर प्रेरणा मिलती रही है |” [9]

इसी तरह हमारे भारत देश की भी अपनी पहचान है | इस देश की विशेषताओं को यूरोपियों द्वारा उल्लेख करते हुए सुनना गर्व का एहसास दिलाता है | भारत का पहनावा, खान-पान, भारतीय दर्शन का ज्ञान संपदा के महत्व को आइसलैंड में भी लेखक ने महसूस किया | एक आइसलैंडी महिला ने राधाकृष्णन द्वारा लिखित पुस्तक “हिन्दू व्यू ऑफ़ लाइफ” पढ़कर जो अनुभव किया “आपका दर्शन अद्‌भुत है कभी सोचती हूँ,आज के संकट का हल आपके देश में मिल सकता है |”[10]

असामाजिक तत्वों का उन्मूलन

आज के समय में जितना तेजी से विकास हो रहा है समाज में उतनी मात्रा में असामाजिक तत्वों में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। चोरी, हत्या, बलात्कार जैसी दुर्घटनाएँ लगातार हो रही हैं, जो कि निंदनीय है। वही आइसलैंड में – "मेरे एक आइसलैंड मित्र ने मुझे बताया कि आइसलैंड में पिछले तीस या चालीस वर्षों से चोरी या डाके की एक भी घटना नहीं हुई और किसी व्यक्ति की हत्या तो अब प्रागैतिहासिक चीज बनकर रह गई है।" 11

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि निर्मल वर्मा का यात्रा साहित्य 'चीड़ो पर चाँदनी' लिखे हुए 55 साल होने को हैं परंतु उसके मूल्य आज भी जीवित हैं जो कि किसी भी समाज को सकारात्मक दिशा निर्देश देने में सक्षम है। समाज में पनप रहे वेश्यावृत्ति, चोरी, डकैती, हत्या, पुस्तक पढ़ने के प्रति कमी, संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण नीति अपने देश एवं स्वयं के प्रति जागरूकता, आइसलैंड का स्वतंत्रता संघर्ष जैसे अनेक बिंदु इस यात्रा साहित्य के महत्व को रेखांकित करता हैं। इन महत्वपूर्ण बिन्दुओं से अन्य देशों को प्रेरणा लेने की आवश्कता है। यह मूल्य ही इस यात्रा साहित्य को आज के संदर्भ में प्रासंगिक बनाता है। यही लेखक एवं इस कृति की सार्थकता को सिद्ध करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'चीड़ों पर चाँदनी', निर्मल वर्मा, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002, संस्करण 2017, पृ. 67
2. वही, पृ. 76
3. सत्याग्रह समाचार पत्र, 10 नवंबर
4. 'चीड़ों पर चाँदनी', निर्मल वर्मा, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002, संस्करण 2017, पृ. 41
5. वही, पृ. 42
6. वही, पृ. 85
7. वही, पृ. 70
8. वही, पृ. 71
9. वही, पृ. 141
10. वही, पृ. 61

11ण वही, पृ. 72